इडिएट मुजाहिद्दीन

भारत के अक्षम एवं भ्रष्ट राजनीतिक नेतृत्व के कारण आज पूरा देश आतंकवाद और अलगाववाद की चपेट में है। मैं अक्षम इसे इसलिए कहता हूँ क्योंकि इस दुष्प्रवृत्ति के खिलाफ पर्याप्त संसाधन एवं क्षमता होने के बावजूद भारत का नागरिक सुरक्षित नहीं, कोई धर्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक स्थल अथवा स्मारक भी सुरक्षित नहीं; वह भ्रष्ट इसलिये है क्योंकि अपने सत्ता सुख के सामने राष्ट्र और हिन्दू समाज की अस्मिता के साथ भी खिलवाड़ करने में कोई कोताही नहीं कर रहा है। वह जानबूझकर आतंकवाद की अनदेखी कर रहा है। इस्लाम का अनुयायी जहाँ कहीं भी गया है, कम अथवा ज्यादा जो भी उसकी संख्या है उसने पूरी दुनियाँ को आतंकित किया है। लेकिन यह भी सच है कि भारत उससे सर्वाधिक प्रभावित है। पिछले दो दशक में जितनी जन और धन की हानि आतंकवाद और अलगाववाद से भारत में हुई है अन्यत्र कहीं भी ऐसा देखने को नहीं मिला। उस सबके बावजूद भारत का वर्तमान राजनीतिक नेतृत्व शुतुरमुर्ग की तरह आचरण करे तो वह न केवल शर्मनाक है अपितु राष्ट्रीय अस्मिता के लिये खतरनाक भी है। हमे अब यह समझने में देर नहीं होनी चाहिये कि पैशाचिक वृत्ति के रूप में जो आतंकवाद आज भारत के मूल समाज को निगलने के लिये उतावला दिखाई दे रहा है वह और कोई नहीं 'इस्लामीआतंकवाद-' है। नाम भले ही हूजी, इण्डियन मुजाहिद्दीन, लश्कर-ए-तैयबा, जैशमोहम्मद-ए-, दीनदारअंजुमन आदि -ए- हो सकते हैं लेकिन उद्देश्य तो इस्लाम के हिंसक और बर्बर मजहबी जुनून को जबरन गैर इस्लाम के अनुयायियों पर थोपना ही है। इस पैशाचिक वृत्ति के खिलाफ हमें पहली बार नहीं लड़ना है। इसके खिलाफ हम प्रत्येक युग में लड़े हैं। देवासुर संग्राम हो अथवा श्रीरामरावण संग्राम-, महाभारत का संग्राम हो अथवा स्वतन्त्रता का संग्राम हमेशा न्याय, सत्य और धर्म के लिये हम संग्राम लड़े हैं। आतंकवाद से लड़ने के लिये हमें कहीं और से प्रेरणा ग्रहण नहीं करनी है। रामायण

हो अथवा महाभारत, पुराण हों अथवा दुर्गा सप्तशती जैसे धर्मिक ग्रन्थ सैदव से वे हमें इस दुष्प्रवृत्ति के खिलाफ लड़ने के लिये प्रेरित किये हैं। आज यह इस्लामी आतंकवाद रक्तबीज की तरह अपना वर्चस्व स्थापित कर रहा है। समय आ गया है जब भारतमाता को जगतजननी माँ दुर्गा के रूप में देखकर हिन्दू नौजवानों को इन इण्डियन मुजाहिद्दीन के इडिएटों पर टूट पड़ना चाहिए। मेरा अटल विश्वास है कि जागृत हिन्दू शक्ति के सामने ये नंगे मूर्ख-इस्लामी दरिन्दे कहीं नजर नहीं आयेंगे, 'इडिएट मुजाहिद्दीन' धमकी भरा ई मेल भेजने का दुस्साहस नहीं कर-पायेंगे। बस सावधानी यही रखना है कि हम शत्रु के साथ शत्रुवत् व्यवहार करें उसे मित्र बनाने की गलती न हो अन्यथा हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान के हश्र की ही पुनरावृत्ति होगी। संकल्प दृढ़ है तो हमारी विजय भी सुनिश्चित है क्योंकि 'यतो धर्मस्ततो जयः'।